देश को सबल नेतृत्व की जरूरत

-मुनि जयंत कुमार

देश अभी विकट स्थितियों से गुजर रहा है। भ्रष्टाचार, गरीबी, मंहगाई, पर्यावरण, और सरकार की अस्थिरता ये ऐसी समस्याएँ हैं जिनका समाधान ढूंढना जरूरी है। इन समस्याओं के कारण लोकतांत्रिक प्रणाली में विश्वास करने वाली देश की जनता में असन्तोष की लहर है। चारों ओर आन्दोलन हो रहे हैं। जिस तरह से उफनता हुआ दूध अग्नि को चुनौती देता है वैसे ही यह असन्तोष, आन्दोलन लोकतन्त्र के सामने चुनौति बनकर उभर रहे हैं। इस उफान के नीचे एक ताप है। विषमता का ईंधन अब इतना प्रज्ज्वलित हो रहा है कि केवल दूध में जल की दो-चार बूंदे डालना पर्याप्त नहीं है। ईंधन पर जल डालना भी आवश्यक हो गया है।

हम अतीत की यात्रा करें। जब भारत की जनता आजादी के लिए लड़ रही थी तब नेताओं ने कहा था- अजादी मिलते ही हमारे भारत का नक्शा बदल जायेगा। यहाँ सतयुग आ जायेगा, दूध की नदियाँ बहेगी, लोग अमन-चैन से जिएगें, किसी के सामने कोई समस्या नहीं रहेगी, देश का कोई नागरिक अभाव से पीड़ित नहीं होगा। परन्तु आज नेताओं का जो चेहरा सामने आ रहा है, उसे देखते हुए यह कहना कठिन है कि आजादी के समय के यह कथन साकार होंगे। जब निष्पक्ष दृष्टि से विश्लेषण करते हैं तो ऐसा लगता है एक आजाद राष्ट्र की जनता कैसे जीती है? कैसे सोचती है? और कैसे काम करती है? इसके अनुरूप वातावरण ही नहीं बन पाया है। देश के तथाकथित उच्च वर्ग के लोग विलासिता में डूब गये है। जिन लोगों का पुरुषार्थी मन कुछ करना चाहता था, वे अभाव और आर्थिक विपन्नताओं से अपाहिज हो गए है। स्वार्थी मनोवृत्ति के लोग समय के चुल्हे पर अपनी रोटी सेकने में तत्पर हो गए है।

राष्ट्रीय विकास का स्वप्न हर व्यक्ति का स्वप्न है ऐसे स्वप्न को संजोना और उसे पूरा करने के लिए प्रयत्नशील रहना हर निष्ठाशील राष्ट्रवादी के लिए आवश्यक है। राष्ट्र के लिए विकास जरूरी है, इसमें दो मत नहीं हो सकते। क्योंकि विकास के बिना कोई भी राष्ट्र अपनी गरिमा को सुरक्षित नहीं रख सकता किन्तु वर्तमान परिस्थितियों में विकास के लक्षण दृष्टिगोचर नहीं हो रहे हैं। विकास करने के लिए एक नेतृत्व की आवश्यकता होती है। जिस परिवार, समाज और राष्ट्र में नेतृत्व सबल और सक्षम निर्णय शक्ति वाला होता है वहाँ विकास लुकाछिपी का खेल नहीं खेलता है, परन्तु वर्तमान में जिस तरह से अनुशासनहीनता चल रही है, ऐसा प्रतीत होता है, मानो राष्ट्र नेतृत्व विहीन हो गया है। किसी को किसी का संकोच नहीं, भय नहीं। राष्ट्रीय हिताहित के बारे में सोचने के लिए किसी के पास अवकाश नहीं है। सब अपना स्वार्थ साधने में लगे हुए है। स्वयं को साबित करने में विश्वास कर रहे हैं। इसलिए चारों तरफ शक्ति प्रदर्शन चल रहे। प्रदर्शनों को देखते हुए ऐसा लगता है नेताओं की बाढ आ गई है पर इन नेताओं की भीड़ में कहीं भी सक्षम एवं सबल नेतृत्व नजर नहीं आता। शक्ति प्रदर्शन करने वाले नेतागण सबसे पहले सबल नेतृत्व को उभारने वाले तत्वों पर दृष्टिपात कर लें, उनको जीवन में उतार लें तो शायद वे प्रदर्शन करने के बजाय स्वयं के आत्मानुशासन में रहने को ज्यादा महत्व देगें।

संगठन, राज्य या राष्ट्र का नेतृत्व करने वाले वर्ग में सबसे पहले दूरदर्शिता का होना आवश्यक है। दूरदर्शी नेता कार्य करने से पहले उसके परिणामों को देखता है। अगर कोई कार्य लुभावना लगता है, प्रारम्भ सुखद लगता है, परन्तु परिणाम दुखद होंगे, यह ज्ञात रहता है तो दूरदर्शी उस कार्य को करने में कभी विश्वास नहीं करेगा। दूसरा गुण है- सामाजिकता। लोकसभा, राज्यसभा जो देश की सबसे बड़ी पंचायत है। सारे देश की आवाज दोनों सदनों में गुंजती है। सारे नियम-कानून भी वहाँ से पास होते हैं। सत्ता पक्ष और प्रतिपक्ष किसी भी एक मसले पर आम राय कायम नहीं कर पाता। दोनों में तीखी बहस और